सामाजिक प्रक्रिया

समाज में दो या दो से अधिक व्यक्तियों, समूहो और समुदायों में होनें वाली पारस्परिक अन्त:क्रिया सामाजिक संबधों का आधार हैं। यह अन्त:क्रिया विभिन्न स्वरूपों में दिखायी देती है, जिसे हम सामाजिक प्रक्रिया कहते हैं।

बीसेन्ज के अनुसार "परम्पर संबधों, क्रिया के विभिन्न स्वरूपों को सामाजिक प्रक्रियाएं कहते हैं।"

मैकाइवर एंव पेज– "प्रक्रिया का अर्थ है निरंतर परिवर्तन जो परिस्थिति की आंतरिक शक्तियों के घात – प्रतिघात के फलस्वरूप निश्चित रूप से घटित होता हैं।"

सामाजिक प्रक्रिया की विशेषताएं

सामाजिक सम्पर्क इसकी पहली विशेषता है यह सम्पर्क शारीरिक एंव मानसिक किसी भी रूप में हो सकता हैं। सम्पर्क से ही संचार जन्म लेता हैं। संचार के द्वारा ही हम अपने विचारों, भावनाएं एंव विश्वासों को दूसरे तक ही प्रवाहित करते है सामाजिक संपर्क और संचार मिलकर कई अन्त:क्रियाओं को जन्म देते हैं। सामाजिक प्रक्रिया की विशेषता के तौर पर घटनाओं की पुनरावृत्ति होना आवश्यक है पुनरावृति के साथ ही सामाजिक घटनाओं में निरंतरता का भी गुण होता हैं।

सामाजिक प्रक्रिया की एक अन्य विशेषता विविधता हैं। क्योकि एक व्यक्ति, समूह एंव समुदाय के साथ की गई अन्त:प्रक्रिया में विविधता होती हैं। प्रत्येक सामाजिक प्रक्रिया का कोई ना कोई परिणाम अवश्य मिलता है– चाहे वह विघटनकारी हो या संगठनकारी।

सामाजिक प्रक्रिया के प्रकार

मुख्यता: सामाजिक प्रक्रिया दो प्रकार की होती हैं– सहयोगी सामाजिक प्रक्रिया, असहयोगी सामाजिक प्रक्रिय।

सहयोगी सामाजिक प्रक्रिया अर्थात एकीकरण करने वाली सामाजिक प्रक्रिया जैसे– सहयोग, व्यवस्थापन और सात्मीकरण।

असहयोगी सामाजिक प्रक्रिया अर्थात प्रतिस्पर्धा, प्रतिकूलता संघर्ष आते हैं।